वन : जैव विविधता का भंड़ार

समस्त बाइबिल में हमें वृक्षों का वर्णन मिलता है। हमें इनका वर्णन बाइबिल की पहली पुस्तक उत्पत्ति से लेकर अन्तिम पुस्तक प्रकाशितवाक्य तक मिलता है। जहां उत्पत्ति (1:11-13) में परमेश्वर ने ''पेड़ जिनमें अपनी–अपनी जाति के अनुसार बीज होता है, और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक–एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं' सृष्टि की और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।' वहीं बाइबिल की अन्तिम पुस्तक प्रकाशितवाक्य (22:2) जहां जीवन के जल की नदी उस नगर के बीचों बीच बहती थी, नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था, उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था, और उस वृक्ष के पत्ते से जाति – जाति के लोग चंगे होते थे, इनका वर्णन है।

हमारे विश्वास का केन्द्र बिन्दु जो कि यीशु मसीह है जो एक बढ़ई के घर की कार्यशाला में लकड़ी की बनावट से परिचित हो गया था, जिसने अंजीर के पेड़ से बात की, जिसने गतसमनी के बाग में जैतून के वृक्षों के मध्य प्रार्थना की, जिसकी देह को लकड़ी के क्रूस पर लटकाया गया, और जी उठने के बाद उसे एक माली समझने की भूल की गई। जूलियन ईवान्स ने जो कि पहले वन विज्ञान के प्रोफेसर थे और टियर फंड के डायरेक्टर थे अपनी पुस्तक परमेश्वर के पेड़ : पेड़, जंगल और वन में बाइबिल के अन्दर वृक्षों और वनों के महत्व को चाहे वो उसका शब्दिक अर्थ हो या परमेश्वर के कार्यो के द्वारा हो उसे विस्तार पूर्वक लिखते हैं।

यह सभी हमे इस बात का स्मरण कराते हैं कि हमारा विश्वास सिर्फ आत्मिक नहीं है बल्कि भौतिक दुनिया जिसमे परमेश्वर ने हमें रखा है उस पर भी गहराई से सन्नहित है। यह दुनिया से बचाए जाने के बारे में नहीं है। इसके बजाय, हम उस दुनिया के लिए बच गए हैं जिसे परमेश्वर से इतना प्यार किया कि उन्होंने अपने इकलौते बेटे (यूहन्ना 3:16) को भेजा। यीशु के शिष्यों के रूप में हमारा आह्वान परमेश्वर की समस्त सृष्टि को : लोगों और जीव जन्तु, कस्बों और पेड़ों, खेतों और वनों को सक्षम करने के लिए है कि वो फलने और फूलने और समृद्ध होने के द्वारा अपने सृष्टिकर्ता की अराधना करें। जैसा कि भजन 96: 12–13 कहता है, "मैदान और जो कुछ उस में है, वह प्रफुल्लित हों, उसी समय वन के सारे वृक्ष जयजयकार करेंगे। यह यहोवा के सामने हो, क्योंकि वह आने वाला है। वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है, वह धर्म से जगत का और सच्चाई से देश देश के लोगों का न्याय करेगा।''

कोरोना वायरस महामारी की त्रासदी ने हमें फिर से याद दिलाया है कि हम सभी एक ही दुनिया का हिस्सा हैं, जहां प्रकृति और मानव एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित है, और यह विचार कि मनुष्य स्वयं को बिना कोई क्षति पंहुचाये वनों और जैव विविधता का दोहन और दुर्व्यवहार कर सकता है, एक खतरनाक भ्रम है। विशेषज्ञ वर्षों से चेतावनी दे रहे हैं कि वनों की कटाई नए महामारियों का कारण बन सकती है। यूरोपीय वैज्ञानिकों के एक समूह द्वारा फ्रंटियर्स इन माइक्रोबायोलॉजी जर्नल में 2018 के लेख में वनों की कटाई और नए कोरोनोवायरस बीमारियों के संभावित उद्भव की चेतावनी दी गई थी। इसने हमें याद दिलाया कि मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण के स्वास्थ्य का आपस में गहरा संबंध है। जब हम जंगलों को नष्ट करते हैं, तो जानवर शहरों और गांवों में अपना रास्ता तलाशते हैं। जब हम सावधानी के बिना भोजन के लिए वन्य जीवन का उपयोग करते हैं, तो हम पशु वायरस को मानव में स्थानांतरित करने का जोखिम उठाते हैं।

मुझे एक घटना को साझा करने दें। बैंगलोर के किनारे पर बन्नेरघटा एक राष्ट्रीय उद्यान है, एक वन जो भारतीय हाथी, तेंदुआ और यहां तक कि बाघ और साथ ही कई अन्य प्राणियों का घर है, और इसमें कोई संदेह नहीं है, कि वो वायरस को अपने शरीरों में लेकर घूमते हैं। जब मैं बैंगलोर में एक बच्चा था, तो हमने इसे गार्डन सिटी 'कहा, इसमें स्वच्छ हवा और 10 लाख से अधिक की आबादी थी। अब बैंगलोर में आबादी का विस्फोट हो गया हैः बाहरी इलाकों सहित इसकी आबादी 100 लाख (1 करोड़) से अधिक है और बैंगलोरियन इसे 'कचरा शहर' कहते हैं। शहर की वृद्धि ने बन्नेरघटा वन पर दबाव डाला है। ईसाई संरक्षण संगठन, ए रोचा इंडिया (https://www-arocha-in) लगभग 20 वर्षों से वनों और उसके मानव पड़ोसियों का अध्ययन कर रहा है। शहरी फैलाव और फसल–खेत धीरे–धीरे वनों की सीमा तक फैल गए हैं, और इस प्रकार वो वन्यजीवों के आवास पर प्रभाव डालते हैं। ए रोचा इंडिया पत्रिका ने बन्नेरघटा के आसपास मानव और हाथियों के मध्य संघर्ष को कम करने के लिए कठिन काम किया है, लेकिन जब तक हम आसानी से हाथियों को वन से बाहर निकलते हुए देख सकते हैं, तब तक हम आसानी से अन्य वन्य प्राणियों से आने वाले वायरस को जो वनों में स्थानांतरित हो रहे नए मानव पड़ोसियों में फैलने को ट्रैक नहीं कर सकते हैं जो आसानी से हो सकता हैं। भारत के शहरों का जनसंख्या विस्फोट, और सामान्य रूप से विकास, वनों और उनके आस पास मौजूद वन्यजीवों पर भारी दबाव डाल रहे हैं।

फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार, भारत की 21.67% भूमि की सतह वनों से आच्छादित है। गुणवत्ता और प्रतिशत अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग हैं। हरियाणा और पंजाब 4% से कम वनाच्छादित हैं, जबकि पूर्वोत्तर राज्य 70–90% वनों से आच्छादित हैं। कुछ स्थानों में यह वृक्षों के आवरण घने, परिपक्व प्राथमिक वन हैं, जो सबसे बड़ी जैव विविधता की ओर जाता है। दूसरें स्थानों में यह थोड़ा निम्न स्तर का दिखायी देता है, जहां पेड छोटे (पुनः रोपित किये गये) या कमजोर और वृक्षों के कम विकास के साथ सिर्फ झाड़दार वन ही हैं। भारत में 5 में से एक व्यक्ति (275 मिलियन), विशेष रूप से आदिवासी समुदाय, भोजन और आजीविका के लिए वनों पर निर्भर हैं, और भारत सरकार का लक्ष्य है कि वन 33% भूमि को कवर करने के लिए बढ़ें। फिर भी, तेजी से आर्थिक विकास और टिकाऊ वनों के बीच तनाव है। जनता के दबाव के बाद, एक नई राष्ट्रीय वन नीति का मसौदा तैयार किया गया, जिसने वाणिज्यिक विकास और संभावित रूप से बेदखल वन–निवास समुदायों के लिए वनों को खोल दिया, अब इसे वापस ले लिया गया है।

इसलिए, मसीहियों के रूप में, हमें अपनी आराधना और प्रार्थना में वनों के बारे में कैसे सोचना चाहिए, और हमें बाइबिल की शिक्षा के प्रकाश में अपने दैनिक व्यवहार को कैसे बदलना चाहिए? यहां पांच सुझाव दिए गए हैं, –

- **शिक्षित करें कि जंगल परमेश्वर का हैं।** दरअसल, पूरी पृथ्वी और उसमें जो कुछ भी है वह यहोवा ही का है (भजन 24: 1) और इसमें वन भी शामिल हैं। इसलिए, हम वनों को पूर्ण रूप से आर्थिक संसाधन के रूप में नहीं देख सकते हैं, कि हम उनका दोहन करें, और न ही हम उनको हमारे लिए खतरनाक जानवरों और बीमारियों के स्रोत के रूप में देख सकते हैं। भजन 50:10 में, परमेश्वर कहते हैं ''वन के सारे जीव – जन्तु और हजारों पहाड़ों के जानवर मेरे ही हैं''। विश्व स्तर पर वन वो स्थान है जहां वन्यजीवों की सबसे बड़ी सांद्रता – जैव विविधता – स्थित हैं, और जैसे ही हम उन्हें नष्ट करते हैं या उन्हें निम्न कोटि का बनाते हैं, हम स्वयं के जीवन की रचना को नष्ट कर रहे हैं, और परमेश्वर के हाथों द्वारा बनाये गये उसके जीवों पर से उसके अद्वितीय निशान को नष्ट कर रहे हैं जो अन्त में लुप्त हो जायेगा। यह कहना गलत है कि यह दुनिया केवल इंसानों के लिए बनी है। कुलुस्सियों 1:16 में हमने यीशु के बारे में पढ़ा कि "सभी चीजें उसके द्वारा और उसके लिए बनाई गई हैं", और सभी चीजों में हमारी दुनिया के जंगल शामिल हैं। पासवानों, माता–पिता और संडे स्कूल के शिक्षकों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि सभी मसीही यह महसूस करें कि वन परमेश्वर की महिमा के लिए बनाए गए हैं, न कि मुख्य रूप से किसी भी भोग के लिए। बेशक, परमेश्वर उदारता से हमें उसकी रचना के अच्छे फलों का उपयोग करने की अनुमति देता है, लेकिन उनका दुरुपयोग और शोषण करने के अनुमति नहीं देता।

- **वनों की कटाई के लिए पश्चाताप।** वनों की कटाई को एक पाप कहने की बात चौंकाने वाली लग सकती है। हमारे नैतिक और आध्यात्मिक रूप से पाप में गिरने के कारण स्वभाव से ही पाप करते रहे है। हालाँकि, पाप के अन्तर्गत वो सब कुछ निहित है जो परमेश्वर के अच्छे उद्देश्यों को नष्ट कर देता है, और परमेश्वर के आत्म–प्रकाशन को विकृत करता है, या उन रिश्तों को नुकसान पहुंचाता है जिन्हें परमेश्वर ने जीवन दिया है। यह आवश्यक नही है कि किसी पेड़ को काटने का अर्थ यह नहीं है कि वह पाप हो, लेकिन यह अच्छी सलाह है कि आप जो भी पेड़ काटते हैं उसके लिए दो पेड़ लगाएं और उसकी देखभाल करें। और इस बात का भी ध्यान रखें कि एक पेड़, खास तौर पर एक बड़ा और परिपक्व पेड, मात्र एक लकड़ी का साधन नहीं है, यह एक समाज है जहां बहुत सारे छोटे पौधे, कीड़े मकोड़े, कवक, जीव जन्तु, पशु – पक्षियों का घर है। वनों में दुनिया की जैव विविधता का सबसे बड़ा भंडार है, वे हमें सांस लेने के लिए स्वच्छ हवा देते हैं, वे जलवायु और वर्षा को विनियमित करने में मदद करते हैं, वे मिट्टी के कटाव को रोकते हैं, वे खाद्य पदार्थ, ईंधन और दवाएं प्रदान करते हैं। विश्व स्तर पर हम मुख्य रूप से पशुपालन और ताड़ के तेल को उगाने के लिए हर 2 सेकंड में लगभग 180.7 लाख एकड़ में हर साल एक फुटबॉल मैदान के बराबर वनों को खो रहे हैं। इन आंकड़ों के पीछे लालच और स्वार्थ का पाप निहित है। अधिकांश वनों की कटाई हमारी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए नहीं है, बल्कि हमारी उन चाहतों को पूरा करने के लिए की जाती है जिनकी हमें वास्तव में कोई जरूरत नहीं है। वनों की कटाई हमारे साथी प्राणियों के साथ, परमेश्वर की रचना के साथ और अंततः परमेश्वर के साथ हमारे रिश्तों को नष्ट कर देती है, जो अपनी बनायी गयी सृष्टि के द्वारा हमसे बात करता है (रोमियों 1:20)। मसीहियों के रूप में हमें अपने व्यक्तिगत पापों और उन संस्कृतियों के पापों के लिए पश्चाताप करने की आवश्यकता है, जिनका हम हिस्सा हैं।
- **वनों का आनंद उठायें और उत्सव मनायें,** उन सभी अच्छी बातों के लिए जो वो हमें रोज की आराधना और जीवन के लिए देते हैं। उत्पत्ति 1:29 में परमेश्वर कहते है कि '' सुनो जितने बीज वाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीज वाले फल होते हैं वे सब मैंने तुमको दिए हैं, वे तुम्हारे भोजन के लिए हैं।'' जैसा कि हमने देखा, पेड़ और वन परमेश्वर की संपत्ति हैं, लेकिन वह हमें भोजन के लिए उनका उपयोग करने के लिए देता है। मुझे यह आश्चर्यजनक नहीं लगता कि कई संस्कृतियां पेड़ों की पूजा करती हैं या उनके नीचे प्रार्थना करती हैं। बेशक, वे सृष्टिकर्ता (यिर्मयाह 10: 3–5) के बजाय बनाई गई चीजों की पूजा करने के विषय में गलत हैं। हालांकि, शायद भ्रम की स्थिति शुरू हो जाती है क्योंकि परमेश्वर ने पेड़ों को इस बात का प्रतीक बनाया है कि परमेश्वर खुद हमारे लिए कितना कुछ प्रदान करते हैं: आश्रय, सुरक्षा, पोषण, दवाएं, ईंधन, घर और बहुत कुछ। शास्त्रों में, पेड़ों को परमेश्वर की पूजा के रूप में चित्रित किया गया है। यशायाह 52:12 में कहता है कि परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में'' वे आनंद से ताली बजायेंगे'' भजन 148:9 ''फल के पेड़ और सभी देवदार'' (सृष्टि के कई अन्य भागों के साथ) प्रभु की प्रशंसा करने का आग्रह किया जाता है! इसलिए, मसीहियों के रूप में हम परमेश्वर की आराधना और धन्यवाद पेड़ों के साथ और पेड़ों के लिए भी कर सकते हैं। जिसमें हम बाहर जा कर खुले स्थानों में जा कर बरगद, जकरंदा, आम या ताड़ के पेड़ के नीचे प्रभु की आराधना कर सकते हैं, या पेड़ों से अच्छे फल ले कर परमेश्वर के भवन में ला कर हम धन्यवाद की भेंट के रूप में चढ़ा सकते हैं। इसके साथ ही हम हमारे चर्च के परिसर में देशी/स्थानीय पेड़ ला कर उसे लगा सकते हैं, जैसा कि रोचा फिलिपींस करता है, जहां वृक्षों को वर्षगांठ, जन्मदिन, मृत्यु के बाद यादगारी के तौर पर और बपतिस्मा के समय में लगाया जाता है।
- **वनों और वन उत्पादों के संरक्षण और सावधानी से बचाव** हमारे कचरे और संसाधनों की खपत को कम करने के माध्यम से करें। यदि वनों की कटाई पापपूर्ण हो सकती है, तो हमारे लिए वन उत्पादों के अनावश्यक उपयोग को कम करना एक आत्मिक अनुशासन हो सकता है। यह शिष्यत्व का बहुत व्यावहारिक रूप है। हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम कागज (जो कि पेड़ों से मिलते है) की बर्बादी न करें, और केवल ऐसे कागज का उपयोग करें जो पुर्ननवीनीकरण द्वारा बनाया जाता है या स्थायी स्रोतों से (जहां प्रत्येक कटाई के लिए 2 या अधिक पेड़ लगाए जाते हैं)। हमारे फर्नीचर और निर्माण सामग्री के लिए, हमें उन मोटी लकड़ी के उपयोग से बचना चाहिए जो अक्सर प्राथमिक वनों से आती हैं और जिनको बढ़ने में कई साल लगते हैं। यदि हम पार्कों, जंगलों और वनों का दौरा करते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम केवल वहां की फोटो लें और केवल अपने पैरों के निशान ही छोड़ें, हम जिस पारिस्थितिक तंत्र का दौरा कर रहे हैं उसकी अखंडता का सम्मान करते हैं। व्यवस्थाविवरण 20: 19–20 में हम इस्राएल के लोगों को प्रतिज्ञा किए गए देश पर कब्जा करने के लिए परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं। उन्हें कुछ चीज़ों के लिए पेड़ों का उपयोग करने की अनुमति दी गई थी, लेकिन फलों के पेड़ों को काटने की या पेड़ों को व्यर्थ नष्ट करने की अनुमति नहीं दी गई। यह उन कई स्थानों में से एक है जहाँ बाइबिल हमें परमेश्वर की रचना के उपहारों का उपयोग निरंतर और संयम के साथ करना सिखाती है। परमेश्वर की रचना के प्रति सम्मान दिखाना, जो कुछ भी उसने बनाया है उसके प्रति सम्मान प्रकट करना परमेश्वर के प्रति हमारी आराधना को प्रस्तुत करता है।
- **वनों और वनों में निवास करने वाले समुदायों की सुरक्षा और वन उत्पादों के उपयोग के आस–पास सावधानीपूर्वक विनियमन के लिए अभियान का समर्थन करें**। हमारा विश्वास हमें सक्रिय नागरिक होने के लिए प्रोत्साहित करता है कि हम अपने नेताओं के लिए प्रार्थना करें और एक लोकतांत्रिक समाज में रहने के कारण उनकी जिम्मेदारी के लिए उनकी जवाबदेही को भी ध्यान में रखें। यदि शक्तिशाली कंपनियों और उनके राजनीतिक दोस्तों के पास ऐसी योजनाएं या नीतियां हैं जो महत्वपूर्ण जंगलों को नष्ट या खराब कर देंगी, और वहां रहने वाले मानव समुदायों और वन्यजीवों को जोखिम में ड़ाल देंगे, तो जैसा कि जो लोग सृष्टिकर्ता परमेश्वर और न्यायी परमेश्वर पर विश्वास करते हैं तो हमें उन बातों का विरोध करना चाहिए और जो भी कानूनी कदम उठाए जा सकते हैं उन्हें उठाना चाहिए। यदि वन्यजीवों और वन्यजीव उत्पादों में अवैध व्यापार हमारे देश या हमारे राज्य में हो रहा है, तो हमें इस पर सच्चाई की रोशनी डालनी चाहिए और उन पदाधिकारियों को कार्यवाई के लिए बुलाना चाहिए। मसीही लोग हमेशा से ऐसे लोग रहे हैं जो सताए गए लोगों और जो अपने लिए आवाज नहीं उठा पाते हैं उनके लिए बोलते रहे हैं, और आज शायद इसमें हमें पेड़ और वन को भी शामिल करना होगा कि हम उनके लिए भी बोलें। रोमियों 8:22 बताता है कि सृष्टि कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है, और साथ ही बड़ी आशा भरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की बाट जोह रही है। पेड़ों और उनके लिए आवाज उठाने वालों की सुरक्षा के लिए अभियान चलाकर, हम परमेश्वर की घायल रचना के कराहनों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में मदद कर सकते हैं।

और निष्कर्ष में, हमें वनों के निर्माण के लिए, जो जैव विविधता के भंडार हैं, खड़ा होना है। हम यह सिखाने के द्वारा कर सकते हैं कि वन परमेश्वर के हैं, वनों की कटाई में हमारे योगदान के लिए हमें पश्चाताप करना हैं। वनों का आनंद उठायें और उसके लिए उत्सव मनायें, हम संयम बरतें क्योंकि हम पेड़ों और जंगलों की रक्षा करते हैं और वनों की रक्षा के लिए और जो उन पर निर्भर करते है उनके लिए अभियान चलाते हैं। हमारे पास मसीही इतिहास में कई अद्भुत उदाहरण हैं: मार्टिन लूथर जिन्हें यह कहते हुए प्रस्तुत किया जाता है कि ''यदि यीशु मसीह कल वापस आने वाले हैं, तो भी मैं आज एक पेड़ लगाऊंगा'', विलियम कैरी – जिन्होंने न केवल सुसमाचार प्रचार किया और बाइबिल का अनुवाद बंगाली में किया, बल्कि भारत के पौधों और पेड़ों पर पहली वैज्ञानिक पुस्तक की भी रचना की अगर हम ईश्वर द्वारा लगाए गए वनों की रक्षा में अपनी भूमिका निभाते हैं, तो हम यह कहने में भजनकार के साथ जुड़ सकते हैं: मैंदान और जो कुछ उस में है, वह प्रफुल्लित हो, उसी समय वन के सारे वृक्ष जयजयकार करेंगे। यह यहोवा के सामने हो, क्योंकि वह आनेवाला है। वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है, वह धर्म से जगत का और सच्चाई से देश–देश के लोगों का न्याय करेगा।''

रेव. डॉ. डेव बुकलेस ए रोचा इंटरनेशनल (www.arocha-org) के लिए धर्मशास्त्र के निदेशक हैं। भारत में, ए रोचा विशेष रूप से स्थानीय चर्चों और व्यावहारिक संरक्षण परियोजनाओं के साथ बैंगलोर क्षेत्र में काम कर रहे हैं। www-arocha-org/india